MANOHAR PARRIKAR INSTITUTE FOR DEFENCE STUDIES AND ANALYSES
मनोहर पर्रिकर रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान

MP-IDSA
Commentary

पाकिस्तान के बलूचिस्तान में बी.एल.ए. की बढ़ती ताकत

आशीष शुक्ल

सितम्बर 06, 2024

सारांश

बी.एल.ए. के हालिया ऑपरेशन हेरोफ़ ने इस्लामाबाद एवं रावलपिंडी स्थित राजनीतिक एवं सैन्य एस्टाब्लिशमेंट को अन्दर से झकझोर कर रख दिया है|

पाकिस्तान में नृजातीय बलोच पिछले कई दशकों से अपने अलग अस्तित्व के लिए संघर्षरत हैं| सन 1947 में भारतीय उपमहाद्वीप के बँटवारे और तत्पश्चात पाकिस्तान के अस्तित्व में आने से पहले ही कलात (वर्तमान बलूचिस्तान) के शासक, जिन्हें 'खान' कहा जाता था, ने अपने स्वतंत्र अस्तित्व की स्वीकार्यता के लिए औपनिवेशिक शासन से बात-चीत कर रहे थे| पाकिस्तान के जन्म से तीन माह पहले, कलात के कानूनी सलाहकार की हैसियत से मुहम्मद अली जिन्ना स्वयं ब्रिटिश शासन से इस मुद्दे पर बात-चीत (Negotiate) कर रहे थे|

ब्रिटिश शासन से बात-चीत (Negotiate) के दौरान कलात का मुख्य तर्क यह था कि नेपाल की तरह ही उसके (कलात) सम्बन्ध भी सीधे ब्रिटिश क्राउन से थे, इसलिए उसे (कलात) को अन्य भारतीय रियासतों की तरह नहीं देखा जाना चाहिए| लेकिन बँटवारे के पश्चात पाकिस्तान के स्वतंत्र अस्तित्व में आने के बाद मुहम्मद अली जिन्ना ने कलात को पाकिस्तान का हिस्सा बना दिया| नृजातीय बलोच तभी से अपने स्वतंत्र अस्तित्व की लड़ाई लड़ते चले आ रहे हैं| उनका संघर्ष वर्तमान समय में अपने पाँचवें चरण में है|

मध्यम-वर्गीय नेतृत्व

बलोच अस्तित्व की लड़ाई का पाँचवां चरण पिछले चार चरणों की तुलना में कई दृष्टिकोणों से भिन्न है| इस चरण का नेतृत्व पढ़े-लिखे मध्यम वर्गीय नौजवानों के हाथ में है जो बलोच पहचान, इतिहास एवं संस्कृति, वहाँ उपलब्ध प्राकृतिक

संसाधनों के साथ-साथ वहाँ की मूल-भूत समस्याओं और अपने पूर्वजों द्वारा पाकिस्तान के खिलाफ संघर्षों की दास्तानों से भलीभांति परिचित हैं| एक ओर तो कुछ राष्ट्रवादी समूह लोकतान्त्रिक तरीकों से अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत हैं तो वहीँ दूसरी ओर कुछ समूहों ने हथियार उठा लिए हैं| कुछ अन्य पीड़ित परिवार एवं नागरिक समाज के लोगों ने शांतिपूर्ण धरना प्रदर्शनों के माध्यम से पाकिस्तान में आम एवं खास लोगों को बलूचिस्तान की वास्तविकताओं से अवगत कराने का जिम्मा लिया है|

वर्तमान समय में बलोच समुदाय पाकिस्तान और चीन के बीच उभरे गठजोड़ को लेकर काफी चिंतित हैं| यह गठजोड़ न केवल बलूचिस्तान के प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन कर रहा है, बल्कि उसके रणनीतिक एवं आधारभूत संरचनाओं जैसे कि ग्वादर बंदरगाह का भी उपयोग कर रहा है| वह भी स्थानीय बलोचों के हितों की अनदेखी करते हुए और उन्हें प्रांतीय संसाधनों में बिना वाजिब हिस्सेदारी दिए हुए| उपरोक्त तथ्यों के आलोक में कोई भी बलोच लोगों के पाकिस्तान से विरक्ति का वास्तविक अंदाजा लगा सकता है|

आत्मघाती हमलों की रणनीति

हाल ही में पाकिस्तान के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष करने वाले समूहों ने पाकिस्तानी सेना को गंभीर नुकसान पहुँचाने और चीन की बलूचिस्तान में संलिप्तता रोकने के उद्देश्य से आत्मघाती हमले की रणनीति पर अमल करना प्रारंभ कर दिया है|

बलोच मुद्दे पर अपने आप को कुर्बान कर देने वाले नृजातीय बलोचों में अब महिला आत्मघातियों की भी ठीक-ठाक संख्या होने लगी है| गौरतलब है कि अप्रैल 2022 में शारी बलोच नाम की एक तीस वर्षीय महिला, जिसके दो बच्चे भी थे, ने कराची विश्वविद्यालय के 'कन्फ्युशियस केंद्र' को अपने आत्मघाती हमले का निशाना बनाते हुए पूरे देश को झकझोर दिया था|[1] इस हमले में तीन चीनी प्रशिक्षकों सहित चार लोगों की मृत्यु हुई थी| पिछले 25 अगस्त को भी एक अन्य बलोच महिला महल बलोच पाकिस्तानी सैन्य ठिकाने पर एक आत्मघाती हमले में शामिल थी|

'ऑपरेशन हेरोफ़'

एक ऐसे समय में जब पाकिस्तान आतंरिक चुनौतियों से निपटने में संघर्षरत है, बलोच नृजातीय राष्ट्रवादियों ने सबसे संवेदनशील प्रांत में उसके खिलाफ एक नया मोर्चा खोल दिया है| इस मोर्चे का समय काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह एक नवाब अकबर शाहबाज़ खान बुगती के मौत की 18वीं वर्षगाँठ से मेल खाता है गौरतलब है कि वर्ष 2006 में जनरल परवेज़ मुशर्रफ के कार्यकाल के दौरान एक सैन्य ऑपरेशन में नवाब अकबर बुगती, जो उस समय बलोच प्रतिरोध के बड़े नेता थे, की मौत हो गयी थी| उनकी मौत के फौरन बाद बलोच समूहों ने पाकिस्तान के जारी अपने संघर्ष में तेजी ला दी थी|

[1] Abdul Basit, **"Women Suicide Bombers and the Changing Trajectories of Pakistan's Baloch Insurgency"**, *New Lines Magazine*, 14 December 2023.

बीते 25 अगस्त को बलोच लिबरेशन आर्मी (बी.एल.ए.) ने "ऑपरेशन हेरोफ़" के माध्यम से इस्लामाबाद और रावलपिंडी को एक नयी चुनौती पेश कर दी है| 'हेरोफ़' एक बलोच शब्द है जिसका तात्पर्य है "सभी ओर से आने वाली तेज हवा"| ऑपरेशन 'हेरोफ़' को बी.एल.ए. की एक निहायत ही खतरनाक इकाई, जिसे मजीद ब्रिगेड के नाम से जाना जाता है, ने अंजाम दिया था| यह इकाई 2011 में अस्तित्व में आई थी तथा इसका नाम बलूचिस्तान के दो 'मजीदों' के नाम पर रखा गया है जिन्होंने बलोच अस्मिता के लिए अपना सर्वस्व कुर्बान कर दिया था|

'ओपरेशन हेरोफ़' पाकिस्तानी सेना पर हाल में हुए सर्वाधिक महत्वपूर्ण हमलों में एक था जिसमें 130 लोगों के मरने का दावा किया गया है| बी.एल.ए. द्वारा जारी प्रेस रिलीज़ में यह साफ़-साफ़ कहा गया है कि इस हमले को मजीद ब्रिगेड के दो आत्मघातियों – रिजवान बलोच और महल बलोच – ने अंजाम दिया और फ्रंटियर कोर (एफ.सी.) के बेला कैम्प पर उनका लगभग बीस घंटे तक कब्ज़ा रहा| इसी तरह बी.एल.ए. के स्पेशल टैक्टिकल ऑपरेशन स्क्वाड (एस.टी.ओ.एस.) और फतह स्क्वाड ने बलूचिस्तान के प्रमुख राजमार्गों को अवरुद्ध करते हुए उन्हें लगभग 12 घंटे तक अपने नियंत्रण में रखा| बी.एल.ए. के अनुसार बेला कैम्प हमले में मरने वाले 'दुश्मन अमलों' (enemy-personnel) की संख्या 68 थी, जबकि फतह स्क्वाड एवं एस.टी.ओ.एस. की कार्रवाई में 62 'सैन्य अमलों' (military-personnel) के मारे गए|[2]

[2] Bahot, **"Operation Herof was The First Phase of Reclaiming Control over Baloch Land – BLA..."**, X (formerly Twitter), 26 August 2024.

बाद में बी.एल.ए. ने दोनों आत्मघातियों की फोटो और एक सात मिनट का वीडियो भी सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर जारी किया| इस वीडियो में साफ़ देखा जा सकता है कि कुछ बलोच लड़ाकों ने राजमार्ग के बगल एक पुलिस स्टेशन को अपने कब्ज़े में लेकर वहाँ अपना झंडा लगा दिया है|[3] एक बलोच लड़ाका पुलिस की गाड़ी पर गोलियाँ चलते देखा जा सकता है जबकि पास ही में एक दूसरी पुलिस की गाड़ी को आग के हवाले कर दिया गया है| कुछ लड़ाके बीच-बीच में 'आजाद बलूचिस्तान' के नारे भी लगा रहे थे| उपरोक्त वीडिओ में राजमार्ग पर दो बड़े ट्रक, जिसके साथ बड़े-बड़े एलपीजी टैंकर जुड़े हैं, और कुछ कारें और मोटरसायकिल सड़क के बीचो-बीच खड़े दिखाई देते हैं|

पाकिस्तानी मीडिया का कवरेज

पाकिस्तान की मुख्य धारा की मीडिया का बलूचिस्तान की घटना से सम्बंधित कवरेज काफी अलग है जिसमें बलोच लड़ाकों द्वारा बेला कैम्प पर हमले तथा बलूचिस्तान के सभी प्रमुख राजमार्गों पर कब्ज़े से सम्बंधित ख़बरों को कम करके रिपोर्ट किया गया है| बेला कैम्प और राजमार्गों पर बलोच लड़ाकों के 12 से 20 घंटे के कब्ज़े पर किसी महत्वपूर्ण मीडिया संस्थान ने कोई खास ध्यान नहीं दिया| ज्यादातर मीडिया संस्थानों ने अपनी ख़बरों और विश्लेषणों को पाकिस्तानी सेना और सरकार के आधिकारिक वक्तव्यों तक सीमित रखा है| सभी मीडिया संस्थानों

[3] **"BLA Fighters Blockade Coastal Highway, Attack Police Station, and Burn Vehicles in Jiwani area of Gwadar"**, Internet Archive, 25 August 2024.

ने बलूचिस्तान के मुसाखैल में पंजाब प्रान्त के विभिन्न इलाकों से आने वाले 23 मजदूरों को बसों से उतारकर उनकी शिनाख्त करते हुए मारे जाने की खबर को प्रमुखता दी है| साथ ही पाकिस्तानी सेना की मीडिया विंग आई.एस.पी.आर. द्वारा 21 आतंकवादियों का खात्मा करते हुए हालात सामान्य करने के दावे को भी प्रमुखता दी गयी है|[4] बी.एल.ए. के दावे के विपरीत आई.एस.पी.आर. का कहना है कि बलूचिस्तान में 10 सैन्य जवानों के अतिरिक्त चार लॉ एन्फोर्समेंट एजेंसीज के जवानों की शहादत हुई है|[5]

निष्कर्ष

पाकिस्तान वर्तमान समय में अपनी वाह्य सीमाओं पर काफी कमजोर और असुरक्षित प्रतीत हो रहा है| चाहे यह अफ़ग़ानिस्तान सीमा पर स्थित खैबर पख्तुन्ख्वा हो, अरब सागर, ईरान और अफ़ग़ानिस्तान के त्रिकोण पर स्थित रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण बलूचिस्तान हो, या गैर-कानूनी तरीके से हथियाए गए जम्मू एवं कश्मीर तथा गिलगित-बल्तिस्तान हो, वहाँ रहने वाले लोगों में पाकिस्तान विरोधी भावनाएं अपने उफ़ान पर हैं| वर्तमान समय में तेजी से बदलती भू-राजनीतिक एवं भू-रणनीतिक परिस्थितयों के आलोक में इन क्षेत्रों पर पाकिस्तान की ढीली होती पकड़ के गंभीर परिणाम हो सकते हैं|

[4] Abdullah Zehri, **"Balochistan Rocked by Violence as Multiple Attacks Claim More Than 50 Lives; 21 Terrorists Killed"**, *Dawn*, 26 August 2024.

[5] Ibid.

जिस तरह से हाल ही में बी.एल.ए. की मजीद ब्रिगेड द्वारा अत्यंत ही सटीक तथा अच्छी तरह से समन्वित हमले किए हैं, उसने इस्लामाबाद एवं रावलपिंडी स्थित राजनीतिक एवं सैन्य एस्टाब्लिश्मेंट को अन्दर से झकझोर कर रख दिया है| बलूचिस्तान में जारी हिंसा में बढ़ोत्तरी, विशेषकर सशस्त्र संघर्ष में संलिप्त बलोच समूहों द्वारा अच्छी तरह से समन्वित एवं सटीक हमले करने की बेजोड़ क्षमता एक ओर तो बलोच लड़ाकों की बढ़ती ताकत की ओर इशारा करती है तो वहीँ दूसरी ओर पाकिस्तानी सैन्य एस्टाब्लिश्मेंट की नाकामियों को प्रकाश में ले आती है| पिछले कुछ वर्षों से जिस तरह से बी.एल.ए. ने अपनी ताकत बढ़ा रहा है उससे प्रतीत होता है कि किस तरह से पाकिस्तान की नीतियों ने आम बलोच लोगों को हथियार उठाने पर विवश कर दिया है|

पाकिस्तान में बलोच प्रतिरोध की बदलती प्रकृति एवं पाकिस्तानी नीतिनिर्माताओं द्वारा इससे निपटने के लिए किए जाने वाले उपायों को देखते हुए यह प्रतीत हो रहा है कि दोनों पक्षों में कोई एक भी निकट भविष्य में झुकने को तैयार नहीं है| बलोच नृजातीय राष्ट्रवादी पाकिस्तानी राज्य से टकराते रहने के लिए कटिबद्ध हैं तो पाकिस्तानी सेना भी उन्हें अपनी सैन्य ताकत के बल पर नेस्तनाबूद करने के लिए आमादा है| पाकिस्तान के राजनीतिक एवं सैन्य संभ्रांत वर्ग ने इतिहास से कोई पाठ न पढ़ने का प्रण किया हुआ है क्योंकि धरातल पर तेजी से बदलती परिस्थितियों के बावजूद वह अपने पुराने बल आधारित तरीकों पर ही निर्भर रह रही है| ताकत के लगातार प्रयोग न तो पहले बलोच लड़ाकों के खिलाफ सफल नहीं रहे हैं, और न ही अब होने कि कोई संभावना है|

About the Author

Dr. Ashish Shukla is Associate Fellow at the Manohar Parrikar Institute for Defence Studies and Analyses, New Delhi.

Manohar Parrikar Institute for Defence Studies and Analyses is a non-partisan, autonomous body dedicated to objective research and policy relevant studies on all aspects of defence and security. Its mission is to promote national and international security through the generation and dissemination of knowledge on defence and security-related issues.

Disclaimer: Views expressed in Manohar Parrikar IDSA's publications and on its website are those of the authors and do not necessarily reflect the views of the Manohar Parrikar IDSA or the Government of India.

© Manohar Parrikar Institute for Defence Studies and Analyses (MP-IDSA) 2024

Manohar Parrikar Institute for Defence Studies and Analyses
1, Development Enclave, Rao Tula Ram Marg
New Delhi 110 010 India
T +91-11-2671 7983 F +91-11-2615 4191
www.idsa.in
Twitter @IDSAIndia
www.facebook.com/ManoharParrikarInstituteforDefenceStudiesAnalyses